भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3908
उत्तर देने की तारीख 24.03.2025

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन और 'परी' परियोजना

3908. श्री बी. मणिक्कम टैगोर :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन की प्रगति का ब्यौरा क्या है तथा अब तक कितने सांस्कृतिक स्थलों और कलात्मक प्रथाओं की पहचान की गई है और उनका दस्तावेजीकरण किया गया है;

(ख) क्या सरकार के पास यह सुनिश्चित करने की कोई योजना है कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन में भारत के हाशिए पर पड़े समुदायों और देश भर में कम ज्ञात परंपराओं की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को प्रभावी रूप से शामिल किया जाए और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) पीएआरआई-'परी' परियोजना ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सांस्कृतिक संवाद और चिंतन को बढ़ावा देने में किस प्रकार योगदान दिया है;

(घ) आगामी वर्षों में इस परियोजना का किस प्रकार विस्तार करने की योजना है;

(ड.) पीएआरआई-'परी' परियोजना को समावेशी बनाये रखने हेतु विशेषकर स्थानीय कलाकारों, इतिहासकारों और सांस्कृतिक विशेषज्ञों को शामिल करने तथा कम ज्ञात क्षेत्रीय कला रूपों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए/उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है; और

(च) क्या सरकार का विचार सांस्कृतिक समारोह और उत्पादन अनुदान योजना के लिए धन के आवंटन को बढ़ाने का है ताकि जमीनी स्तर की सांस्कृतिक पहलों को शामिल किया जा सके और छोटी, समुदाय-संचालित सांस्कृतिक परियोजनाओं को समर्थन दिया जा सके और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) : संस्कृति मंत्रालय ने, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को परिरक्षित और संवर्धित करने हेतु राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन (एनएमसीएम) की स्थापना की है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) द्वारा कार्यान्वित, इस मिशन का उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक धरोहर को और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनः सुदृढ़ करने हेतु इसके सामर्थ्य को प्रलेखित करना है।

आजादी का अमृत महोत्सव के भाग के रूप में, एनएमसीएम द्वारा जून, 2023 में मेरा गांव मेरी धरोहर (एमजीएमडी) पोर्टल (https://mgmd.gov.in/) की शुरुआत की गई। इस पहल का उद्देश्य भारत के 6.5 लाख गांवों की सांस्कृतिक धरोहर को प्रलेखित करना है। वर्तमान में, 4.5 लाख गांव, अपने संबंधित सांस्कृतिक पोर्टफोलियो सहित इस पोर्टल पर लाइव हैं।

एमजीएमडी पोर्टल में व्यापक प्रकार के सांस्कृतिक घटक सम्मिलित हैं जिनमें मौखिक परंपराएं, आस्थाएं, रीति-रिवाज, ऐतिहासिक महत्व, कला रूप, पारंपरिक खान-पान, प्रख्यात कलाकार, मेले और महोत्सव, पारंपरिक परिधान, आभूषण और स्थानीय लैंडमार्क शामिल हैं। इस पोर्टल पर भारत के हाशिए पर पड़े समुदायों की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और देश भर की कम ज्ञात परंपराओं को भी शामिल किया गया है।

एनएमसीएम, भारत की सांस्कृतिक धरोहर के परिरक्षण और ग्रामीण समुदायों के सशक्तीकरण की ओर महत्वपूर्ण कदम है। सांस्कृतिक परिसंपत्तियों के प्रलेखन और संवर्धन के द्वारा, यह मिशन सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की ओर लक्षित है।

(ग): प्रोजेक्ट परी (पब्लिक आर्ट ऑफ इंडिया) भारत के सार्वजनिक कला परिदृश्य को पुनःसुदृढ़ करने के लिए संस्कृति मंत्रालय, ललित कला अकादमी और राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी द्वारा एक संयुक्त पहल है। भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत और समकालीन विषयों से प्रेरणा लेते हुए, इसका उद्देश्य ऐसी सार्वजनिक कला बनाना है जो देश की सांस्कृतिक पहचान को प्रतिबिंबित करे। 46वीं विश्व धरोहर समिति की बैठक के दौरान आरंभ की गई परी परियोजना पारंपरिक और आधुनिक कला रूपों के मिश्रण के माध्यम से संवाद और प्रेरणा को प्रोत्साहित करती है। पहला बड़ा आयोजन दिल्ली में 21-31 जुलाई, 2024 को विश्व धरोहर समिति के सत्र के साथ हुआ। इस संयुक्त प्रयास ने पूरे भारत से 200 से अधिक दृश्य कलाकारों को एकजुट किया, जिसका उद्देश्य भारत की कलात्मक विरासत को उसकी भव्यता सहित प्रस्तुत करना था। इस पहल को दिल्ली के प्रतिष्ठित स्थानों पर आयोजित किया गया था, जैसे कि लीला होटल के पास अफ्रीका एवेन्यू, और भारत मंडपम के अंदर कियोस्क, आईजीआई हवाई अड्डे के पास, आईटीओ ब्रिज, और कई अन्य स्थान आदि। इन स्थानों को जीवंत कैनवस में बदल दिया गया, जिनके माध्यम से विभिन्न राज्यों की अनूठी कलात्मक परंपराओं और शैलियों का कीर्तिगान किया गया।

इस पहल के दौरान कुल 23 कला रूपों को प्रदर्शित किया गया, जिनमें फड़, गोंड, कलमकारी, पिचवाई, थंगका, चेरियल, लंजा सौरा, बनी ठनी, वारली, पिथौरा, ऐपण, केरल भित्ति चित्र, अल्पोना (त्रिपुरा), बूंदी, पट्टचित्र, कांगड़ा, बंगाल पटुआ, संथाल, सोहराई, कोहबर, कावी

और शोरा शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, दिल्ली के कुछ प्रमुख स्थानों पर कलाकारों द्वारा रंगों और स्क्रैप सामग्री से बनी मूर्तियां भी सृजित की गईं, जिससे सार्वजनिक कला संस्थापनाओं की विविधता और नवीनता संवर्धित हुई। यह पहल भारत की सांस्कृतिक समृद्धि और विरासत को समर्पित है, जो लोगों को विविध कला रूपों को तलाशने और उनसे जुड़ने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है, साथ ही सार्वजनिक कला के माध्यम से देश की कलात्मक विविधता के लिए गहन सराहना को बढ़ावा देती है।

(घ): वर्तमान में ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है।

(ड.): यह सुनिश्चित करने के लिए कि परी परियोजना (पब्लिक आर्ट ऑफ इंडिया) समावेशी बनी रहे, सरकार ने कई प्रभावशाली कदम उठाए हैं। सबसे पहले, पूरे भारत के विभिन्न राज्यों के कलाकारों को एक मंच दिया गया है, जो फड़, गोंड, वारली और पिचवाई आदि जैसे क्षेत्रीय कला रूपों को बढ़ावा देते हैं, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन कला रूपों को वह पहचान मिले जिसकी वे हकदार हैं। इसके अतिरिक्त, इतिहासकारों और सांस्कृतिक विशेषज्ञों ने इन कला रूपों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे उन्हें सही संदर्भ में प्रस्तुत किया जाना सुनिश्चित हुआ है। इसके अलावा, सरकार ने कम ज्ञात क्षेत्रीय कला रूपों, जैसे सौरा, कांगड़ा पेंटिंग और संथाल कला आदि को बढ़ावा देने के लिए समर्पित प्रयास किए हैं, जिससे उन्हें दृश्यता प्राप्त हुई जिसकी बहुत आवश्यकता थी। इन कदमों ने परी परियोजना को न केवल समावेशी बनाया है, बल्कि विश्व के समक्ष भारत की विविध और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए एक जीवंत मंच भी बनाया है।

(च): वर्तमान में ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है।

*****